❶ ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

नवसस्येष्टि पर्व-होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 48, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 मार्च, 2025 से रविवार 9 मार्च, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 202 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रृंखला में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव

देश की वर्तमान चुनौतियों पर गहरा चिंतन और समाधान का लिया गया संकल्प

गले लगाइए, रिश्ते बचाइए, नशा हटाइए और देश की एकता एवं प्राकृतिक खेती अपनाने हेतु 6 दिवसीय प्रवचन माला संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म उस कालखंड में हुआ, जब चारों ओर अज्ञान, अविद्या और अंधकार छाया हुआ था। भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी, प्रचलित कुरीतियों के कारण समाज की संपूर्ण व्यवस्था अस्त व्यस्त थी, धर्म के नाम पर ढोंग, पाखण्ड और अंधविश्वास अपने यौवन पर था। महर्षि सन 1860 में गुरु विरजानंद जी के आश्रम मथुरा पहुंचे और 1863 तक आपने आर्ष ग्रंथों का अध्ययन किया और आप वेदों के प्रचार प्रसार में समर्पित हो गए। इस बीच आपने अपने क्रांतिकारी भाषणों, वेदों पर आधारित प्रवचनों और शास्त्रार्थों से एक नई क्रांति का शंखनाद कर केवल भारत राष्ट्र में ही नहीं संपूर्ण विश्व में एक कल्याणकारी हलचल सी मचा दी। उस समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सामने अनेकानेक चुनौतियां थी, किन्तु तप, त्याग, साधना और वेदज्ञान की अमृतधारा के सामने सब नतमस्तक होते गए और समाधान का सूर्य देदीप्यमान होता गया, लेकिन उनकी सत्य और मानव कल्याण की राह में विरोधियों की कमी नहीं थी, लोकोपकारी महर्षि को अनेक प्रकार के अपमान, तिरस्कार ही नहीं जहर तक पीना पड़ा लेकिन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद ने हर चुनौती का सहर्ष सामना किया और उसे समाधान तक पहुंचाया।

6 दिवसीय प्रवचन माला के समापन्न समारोह आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के सभागार में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य प्रांतीय महिला सभा, दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी तथा उपस्थित विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता, आर्यजन

- शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

आर्य समाज 150 स्वर्णिम वर्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह
मधुर प्रेरणा लेकर आया
होली का त्यौहार
आओ, आर्यों मिलकर मनाएं
हम सब सपरिवार
कार्यक्रम
गुरुवार 13 मार्च, 2025
सायं : 3:15 से 7:15 बजे तक
स्थान :
रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल
राजाबाजार, कनॉट प्लेस, स्टेट्स एम्पोरियम के पीछे,
शिवाजी स्टेडियम के पास, नई दिल्ली-110001
नवसस्येष्टि यज्ञ : 3-15 बजे | विशिष्ट संगीत एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम | फूलों की होली
सम्मान : • ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान • सबसे छोटे बच्चे का सम्मान
• सबसे अधिक आयु के महिला एवं पुरुष का सम्मान • सबसे नव विवाहित दंपत्ति का सम्मान
• एक ही वंशावली के सबसे अधिक संख्या में पधारने वाले परिवार का सम्मान
सीधा प्रसारण आर्य सन्देश टी.वी. चैनल पर
आप सब सपरिवार, ईष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।
निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

देववाणी-संस्कृत

ज्ञानी पुरुष सब ओर ईश्वरकृत अद्भुत बातों को देखता है

वेद-स्वाध्याय

अतो विश्वान्यद्भुता चिकित्वाँ अभि पश्यति। कृतानि या च कर्त्वा।।
-ऋ॰ 1। 25। 11
ऋषिः-आजीगर्तिः शुनः शेपः।। देवता-वरुणः।। छन्दः-गायत्री।।

शब्दार्थ-चिकित्वान् = ज्ञानी पुरुष **कृतानि या च कर्त्वा** = जो की जा चुकी हैं और जो की जाएँगी **विश्वानि अद्भुतानि** = उन सब अद्भुत बातों को अतः = इस परमेश्वर से हुई **अभिपश्यति** = सब ओर देखता है।

विनय-इस संसार में हम बहुधा आश्चर्यचकित कर कर देनेवाली घटनाएँ होते देखा करते हैं। इनका करनेवाला कौन है, वैसे तो प्रतिदिन होनेवाली बातों को भी यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमें उनमें भी बड़ी अद्भुतता दीखेगी। ये अन्धकार और प्रकाश कितनी अद्भुत वस्तु हैं जिनका परिवर्तन हम रोज सायं-प्रातः देखते हैं! नन्हे-से बीज से बड़ा भारी वृक्ष बन जाना; अभी चलते-फिरते, हँसते-खेलते दीखते मनुष्य का एकदम ऐसा सो जाना कि वह फिर कभी न जग सकेगा; जीव से जीव पैदा हो जाना- ये सब भी वास्तव में कितनी अद्भुत बातें हैं! परन्तु जब पृथिवी आग बरसाने लगती है और ज्वालामुखी फटने से सैकड़ों शहर बरबाद हो जाते हैं, भूकम्प आते हैं बड़े-बड़े साम्राज्य देखते-देखते मिट जाते हैं, थोड़े ही दिनों में एक मनुष्य सितारे की भाँति ऊँचा उठ जाता है, यशस्वी हो जाता है या राजा रंक हो जाता है, तो इनमें अद्भुतता सभी अनुभव करते हैं। विज्ञान के आजकल के अद्भुत चमत्कारों को देखो! सिद्ध साधु-सन्तों द्वारा हुई चकित कर देनेवाली बातों को देखो! ये सब संसार में एक-से-एक बढ़कर अद्भुत हैं। इन बस अद्भुतों का करनेवाला कौन है ? हम लोग समझते हैं कि इनके करने वाले मनुष्य हैं, मनुष्य की वैज्ञानिक शक्ति या संघशक्ति है; या कुछ भी नहीं है केवल प्रकृति का खेल है, परन्तु जो ''चिकित्वान्'' (जानने वाले) हैं उन्हें तो सब ओर इन अद्भुतों का करने वाला वही इन्द्र (परमेश्वर) दीखता है। उसी से ये सब संसार के आश्चर्य निकलते दीखते हैं। इन सब विविधि आश्चर्य को देखते हुए उनकी दृष्टि सदा उस एक इन्द्र पर ही रहती है। उनके लिए फिर ये आश्चर्य कुछ आश्चर्य नहीं रहते। प्रभु तो ''गूँगे को वाचाल करनेवाले और लँगड़े को भी पहाड़ लँघाने वाले'' हैं ही। संसार में जो अद्भुत बातें हो चुकी हैं वे सब प्रभु की ही की हुई थी; कल जो अद्भुत घटना होनेवाली है, कोई तख्ता पलटने वाले है, वह भी उसी प्रभु की सहज लीला से ही होने वाला है। प्रभु की अपार लीला देखनेवाले ज्ञानी इसमें कुछ आश्चर्य नहीं करते वे अद्भुत-से अद्भुत घटना में कार्यकारण भाव को देखते हैं।

अतः हे मनुष्यो! संसार के इन आश्चर्यो को देखकर चकित होना छोड़ दो, किन्तु इनको देखकर इनके कर्त्ता को पहचानो। उस नट को पहचानो जोकि संसार को यह अद्भुत नाच-नचा रहा है।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के लिए रजिस्ट्रेशन की अनिवार्यता-

कहीं ये कानूनी मान्यता तो नही? गहन चिंतन की आवश्यकता

उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता लागू होने के बाद पहली बार किसी जोड़े को लिव-इन रिलेशनशिप में रहने के लिए कानूनी मान्यता मिल गई है। देहरादून जिले से आवेदन करने वाले इस जोड़े का पंजीकरण अधिकारिक रूप से कर लिया गया है। इसके साथ ही राज्य में लिव-इन रिलेशनशिप का कानूनी पंजीकरण शुरू हो गया है, जो उत्तराखंड में एक ऐतिहासिक कदम बताया जा रहा है।

दूसरी ओर, राज्य में विपक्ष ने लिव-इन रिलेशनशिप की स्वीकार्यता पर दो महीने लंबा आंदोलन और जनमत संग्रह कार्यक्रम शुरू किया है। विपक्ष ने भाजपा के नेतृत्व वाली राज्य सरकार पर लिव-इन रिलेशनशिप को वैध बनाने का आरोप लगाया है, जो सामाजिक लोकाचार के खिलाफ है।

हमें याद है कि साल 2023 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने लिव-इन रिलेशनशिप के एक मामले में टिप्पणी करते हुए कहा था कि शादी का संस्थान जो सुरक्षा, सामाजिक स्वीकार्यता, प्रगति और स्थायित्व एक व्यक्ति को प्रदान कर सकता है, वो लिव-इन रिलेशनशिप कभी नहीं दे सकता। लिव-इन रिलेशनशिप के एक मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस सिद्धार्थ ने कहा था कि इस देश में शादी के संस्थान को बर्बाद करने के लिए एक "सिस्टमेटिक डिज़ाइन" है। समाज को अस्थिर करना और देश की प्रगति में रुकावट लाना, जो फ़िल्म और टीवी सीरीयल दिखाए जा रहे हैं, वो शादी जैसे संस्थान को ख़त्म करने में लगे हैं।

कोर्ट का कहना था कि शादीशुदा संबंध में पार्टनर के साथ बेवफ़ाई और फ्री लिव-इन रिलेशनशिप को प्रगतिशील समाज के तौर पर दिखाया जाता है और नौजवान इसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं।

कोर्ट का कहना था, "लिव-इन रिलेशनशिप को तभी सामान्य माना जाएगा जब शादी का संस्थान इस देश में बेकार बन जाएगा, जैसे कई तथाकथित विकसित देशों में शादी के संस्थान को बचाना एक बड़ी समस्या बन गया है।" कोर्ट का कहना था कि अगर व्यक्ति का परिवार में सौहार्दपूर्ण संबंध नही है, तो वह देश की प्रगति में सहयोग नहीं दे सकता। साथ ही कोर्ट ने कहा था कि एक देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता उस देश के मध्य वर्ग और उसकी नैतिकता पर निर्भर करती है।

अगर ऊपरी तौर पर देखें तो लिव-इन रिलेशनशिप सुनने में बहुत आकर्षक लगता है और यह युवाओं को अपनी ओर खीचता है, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है और मध्यम वर्गीय सामाजिक नैतिकता-नियम का वे सामना करने लगते हैं, ऐसे जोड़े बाद में महसूस करने लगते हैं कि उनके रिश्ते को मिलने वाली सामाजिक स्वीकृति के अभाव में वे सामान्य सामाजिक जिंदगी नहीं जी सकते हैं।

एक तो ब्रेकअप के बाद महिला के लिए समाज का सामना करना मुश्किल हो जाता है। मध्यम वर्गीय समाज इस महिला को रिश्ते से अलग हुई महिला के तौर पर नहीं देखता है। सामाजिक बहिष्कार से लेकर अभद्र टिप्पणियां लिव-इन रिलेशनशिप के बाद महिला की जिंदगी का हिस्सा बन जाते हैं।

असल विवाह दो व्यक्तियों का सामाजिक, धार्मिक तथा कानूनी रूप से साथ रहने का संबंध है। विवाह मानव समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण संस्कार है। इसे पाणिग्रहण संस्कार यानी 16 संस्कारों में से एक माना जाता है। विवाह शब्द में 'वि' का मतलब विशेष से है और 'वाह' का अर्थ वहन करना है। यानी उत्तरदायित्व को विशेष रूप से वहन करना ही विवाह होता है। विवाह दो आत्माओं का पवित्र बंधन है। दो प्राणी अपने

लिव-इन रिलेशनशिप के एक मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस सिद्धार्थ ने कहा था कि इस देश में शादी के संस्थान को बर्बाद करने के लिए एक "सिस्टमेटिक डिज़ाइन" है। समाज को अस्थिर करना और देश की प्रगति में रुकावट लाना, जो फ़िल्म और टीवी सीरियल दिखाए जा रहे हैं, वो शादी जैसे संस्थान को ख़त्म करने में लगे हैं। कोर्ट का कहना था कि शादीशुदा संबंध में पार्टनर के साथ बेवफ़ाई और फ्री लिव-इन रिलेशनशिप को प्रगतिशील समाज के तौर पर दिखाया जाता है और नौजवान इसके प्रति आकर्षित हो जाते हैं।

कोर्ट का कहना था, "लिव-इन रिलेशनशिप को तभी सामान्य माना जाएगा जब शादी का संस्थान इस देश में बेकार बन जाएगा, जैसे कई तथाकथित विकसित देशों में शादी के संस्थान को बचाना एक बड़ी समस्या बन गया है।" कोर्ट का कहना था कि अगर व्यक्ति का परिवार में सौहार्दपूर्ण संबंध नही है, तो वह देश की प्रगति में सहयोग नही दे सकता। साथ ही कोर्ट ने कहा था कि एक देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता उस देश के मध्य वर्ग और उसकी नैतिकता पर निर्भर करती है।

अलग-अलग अस्तित्वों को समाप्त कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं जो एक परिवार और समाज का निर्माण करते हैं। किन्तु आधुनिक काल में इसे युवा स्त्री-पुरुषों का 'बिन फेरे हम तेरे' सहजीवन कहा जा सकता है, ऐसा रिश्ता जिसे लिव-इन पार्टनर तो मानते हैं, लेकिन समाज उसे मन से स्वीकार नहीं करता। क्योंकि यह रिश्ता सामाजिक मर्यादाओं और दायित्वों को अमान्य करता है।

यहां सवाल यह है कि आज पहले की तुलना में ज्यादा युवा 'लिव-इन रिलेशनशिप' में क्यों रहना पसंद कर रहे हैं? ऐसे मामले भी सामने आए हैं, जब युवक-युवतियों ने अपने अभिभावकों से शादी के बजाए लिव-इन में रहने की इजाजत मांगी। 'विधिवत विवाह' को अब वे एक 'जंग लगी' व्यवस्था मानते हैं। लेकिन हम देख रहे हैं कि 'लिव-इन' के दुष्परिणाम सबसे ज्यादा लड़कियों को भोगने पड़ रहे हैं, फिर भी वे लिव-इन में क्यों रहना चाह रही हैं?

इस सवाल का जवाब यही हो सकता है कि आधुनिक युवतियों में ऐसा करने के पीछे हर तरह के सामाजिक बंधनों से मुक्ति और मनमर्जी से जीवन जीने की चाहत है। लिव-इन के पैरोकार इस रिलेशनशिप को अक्सर 'एक दूसरे को पूरी अंतरंगता से जानने की समयावधि' भी करार देते हैं। हकीकत में यह एक दूसरे को 'समझना' कम, कामवासना पूर्ति का जरिया ज्यादा है। क्योंकि दोनों परस्पर संबंधों के आगे को पारिवारिक जिम्मेदारी लेना नहीं चाहते, ऐसी जिम्मेदारी जो उन्हें समाज का हिस्सा बनाती है।

अनावश्यक जोखिम उठाने का खमियाजा ज्यादातर उन युवतियों को उठाना पड़ता है, जो अविवाहित माएं बन जाती हैं, अपने लिव इन पार्टनर से लगातार बलात्कार का शिकार होती हैं। ऐसी युवतियां अमूमन परिवार द्वारा ठुकरा दी जाती हैं। बहुत सारे युवा बच्चे ही पैदा नही करना चाहते अगर वो बच्चे पैदा नहीं करेंगे सोचिये किनकी जनसँख्या ज्यादा बढ़ेगी और कौन आगे इस देश पर राज करेगा?

दूसरा अगर बच्चा पैदा भी हो गया तो अविवाहित यौन संबंधों से जन्मे बच्चे का भविष्य तो और अनिश्चित तथा कठिनाइयों से भरा होता है। उनकी सामाजिक वैधता पर भी प्रश्नचिन्ह होता है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

पढ़ो, सोचो, समझो और समझाओ

वैदिक "तथ्य" जिनको केवल आर्य समाज ही समझा सकता है –

1. मनुष्य मात्र का एक ही धर्म होता है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

2. सभी शास्त्रों से वेदों का स्थान ऊंचा है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

3. केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

4. केवल ऋग्वेद आदि चार मंत्र संहिताएं ही वेद हैं, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

5. वेदों और वैदिक साहित्य की सच्ची व्याख्या कैसे होती है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

6. ईवर तो एक ही है, उनके नाम अनेक हैं – यह बात आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

7. "ओ३म" का सत्य अर्थ केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

8. ईश्वर के अतिरिक्त जीव और प्रकृति भी अनादि, नित्य सत्ताएं हैं, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

9. ईश्वर ने सृष्टि क्यों बनाई , इसका ठीक-ठीक उत्तर केवल आर्य समाज ही दे सकता है।

10. ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

11. ईश्वर सर्वशक्तिमान है, इसका यह अर्थ नहीं कि वह कुछ भी कर सकता है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

12. ईश्वर न्यायकारी और दयालु दोनों है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

13. ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक सत्ता है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

14. ईश्वर आंखों से कदापि दिखाई नहीं देता, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

15. ईश्वर कभी भी शरीरधारी नही होता, अवतार नहीं लेता, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

16. ईश्वर अपरिवर्तनशील है, सदैव एक ही स्वरूप में रहता है, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

17. शरीरधारी व्यक्ति कदापि ईश्वर नहीं हो सकता, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

18. मूर्ति और ईश्वर का भेद केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

19. गुरु, आचार्य आदि कितने ही ज्ञानी, पवित्र हों, वे कदापि ईश्वर नहीं हो सकते, यह बात केवल आर्य समाज ही ठीक से समझा सकता है।

प्रस्तुति – भावेश मेरजा

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे –

मानव सभ्यता को नियमों के अनुसार चलाने के मूल नियम किसने रचे और उनके पीछे की मूल विद्या कौन-सी थी, तो हम एक ही निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि मनुष्य जाति और विश्व सभ्यता का प्राचीनतम संविधान मनुस्मृति ही है, जिसके रचियता महाराज मनु थे और उसी मनुस्मृति को आधार बनाकर ही विश्व की सभी सत्ताओं के संविधानों की रचना हुई और उसी के अनुसार न्याय व्यवस्था भी बनाई गई और इन सबका मूल आधार वेद ही थे।

कुल मिलाकर कहा जाए तो संसार में मौजूद ज्ञान और विज्ञान का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं था जिसके मूल सूत्र वेद में न हों और उसकी उत्पत्ति वेद से न हुई हो और वो आर्यावर्त में सामान्य रूप से प्रचलित न हों।

इन सभी विद्याओं के कारण ही हमारा भारत, आर्यावर्त, विश्व का सिरमौर कहलाता था। समृद्धशाली, वैभवशाली था भारत। इन सभी विद्याओं में शोध करने और अगली पीढ़ियों को पढ़ाने के लिए विश्व के सबसे सुन्दर और भव्य विश्वविद्यालय थे भारत में और इन सब विद्याओं को सुरक्षित रखने के लिए विशालतम पुस्तकालय भी इन्हीं विश्वविद्यालयों में थे। इन्हीं अद्भुत विद्याओं को जानने, समझने और सीखने की इच्छा से विश्वभर के लोग भारत आते थे। चूंकि पूरे विश्व से विद्यार्थी यहां आते थे इसीलिए उन विद्यालयों का नाम **'विश्वविद्यालय'** रखा गया था।

पाठक ध्यान दें कि 'विश्वविद्यालय' शब्द का उपयोग पहली बार प्राचीन भारत में ही हुआ, यहीं से ये विद्याएं विश्व के अन्य देशों में फैलीं* और कालान्तर में वहां जिन विद्यालयों की स्थापना इन विद्याओं को पढ़ाने के लिए हुई, उनका नाम भी विश्वविद्यालय ही रखा गया। इंग्लिश में कहें तो University अर्थात् Universal यानि समस्त विश्व के लिए। और इसीलिए वैभवशाली आर्यावर्त, भारत को कहा जाता था—**विश्वगुरु**।

अब सामाजिक व्यवस्था की बात करें तो समाज में स्त्रियों का स्थान पुरुषों से ऊंचा था। इसका अनुमान इसी बात से लगा सकते हैं कि विवाह में स्वयंवर का अधिकार महिलाओं को ही था। अर्थात् वह अपने लिए वर चुनने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र थी। वे हर प्रकार की योग्यता की परीक्षा करके वर का चयन करती थीं ताकि आने वाली संतान उत्तम गुणों वाली हो। महिलाएं भी गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से पढ़ती थी तथा महान् विदुषी बनती थी। राजाओं की बड़ी सलाहकार अधिकारी के रूप में उनकी रानियां भी होती थीं। अनेक युद्धों में उनका योद्धा रूप भी देखने को मिलता था और बड़े-बड़े विषयों पर शास्त्रार्थ में महिला विदुषियों ने भी भाग लिया था।

शोध कार्य करने वालों की बात करें तो, आधुनिक काल में जिन्हें रिसर्च स्कॉलर कहा जाता है वे ही हमारे प्राचीन काल के 'ऋषि' थे। वेद के एक-एक विषय पर एक-एक ऋषि अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया करते थे।

अणु विद्या (एटॉमिक साइंस) के विस्तार ऋषि—**'कणाद'**। **शल्य विद्या** पर कार्य करने वाले ऋषि का नाम—**'सुश्रुत'**।

वास्तु शास्त्र के प्रगाढ़ ज्ञाता के ऋषि का नाम—**'शिव'**।

नाट्य शास्त्र जो नृतक कला, नाटक कला, अभिव्यक्ति के अन्य तौर-तरीकों का मूल शास्त्र के ऋषि—**'भरतमुनि'**।

योग शास्त्र के ज्ञाता के ऋषि का नाम—**'पातंजलि'**।

सांख्य शास्त्र के ज्ञाता ऋषि—**'महर्षि कपिल'**। **वैशेषिक शास्त्र** के ज्ञाता ऋषि—**'महर्षि कणाद'**।

न्याय शास्त्र के ज्ञाता के ऋषि का नाम—**'महर्षि गौतम'**।

मीमांसा शास्त्र के ज्ञाता के ऋषि का नाम—**'महर्षि जैमिनी'**।

भाषा इतनी उन्नत थी कि कोई भी ज्ञान या विज्ञान का क्षेत्र ऐसा नहीं था जो संस्कृत में न हो। संस्कृत इतनी समृद्ध, विस्तृत और वैज्ञानिक भाषा है कि केवल संस्कृत के व्याकरण का ज्ञाता व्यक्ति, संस्कृत के किसी भी शब्द के अर्थ को बताने की योग्यता रखता था, आज भी रखता है। शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोष (डिक्शनरी) की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। शब्द अपने आप में अर्थ को लेकर ही बनते हैं। यह विशेषता केवल संस्कृत भाषा में ही है विश्व की अन्य किसी भी भाषा में नहीं।

– **क्रमशः**

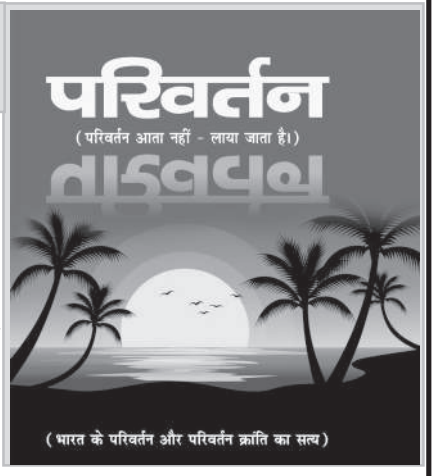

पृष्ठ 5 का शेष

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में .....

सरदार भगत सिंह हो या करतार सिंह सराभा, हो उधम सिंह हो, श्याम जी कृष्ण वर्मा, हो आपने सरलता पूर्वक अपनी चिर परिचित शैली में उदाहरण दे दे करके समझाया कि किस तरह महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा कार्य कर रही थी। महर्षि दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के निर्माता है, देश की आजादी के सूत्रधार हैं और वैदिक संस्कृति को पुनर्जन्म देने वाले ऋषि हैं। उन्होंने पूर्व विश्व गुरु भारत को पुनः विश्व गुरु बनने का जज्बा दिया और आर्य समाज ने देश में सर्वप्रथम चाहे पंजाब नेशनल बैंक हो, बैंक ऑफ़ बड़ोदा हो इनकी स्थापना का कार्य किया। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों पर आधारित इस पूरे भाषण में बीच-बीच में शोधार्थी छात्र-छात्राएं भी इन ऐतिहासिक तथ्यों से अपनी सहमति जताते हुए नजर आए। सभी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी की राष्ट्र और विश्व को दंल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की, उनकी उदार भावनाओं और उनके कल्याणकारी मंतव्यों को स्वीकार किया और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने स्व लिखित पुस्तक परिवर्तन और महर्षि दयानंद सरस्वती के अमर वाक्य उपस्थित विभूतियों को भेंट किए, प्रेम सौहार्द के वातावरण में पूरा कार्यक्रम संपन्न हुआ।

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रिंटिंग प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 18 वर्ष 48 दिनांक 24 फरवरी से 2 मार्च, 2025 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। – *सम्पादक*

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयनन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव पर विभिन्न आर्यसमाजों में प्रवचन माला ...

गतवर्षों की भांति इस वर्ष महर्षि दयानंद दशमी और बोधोत्सव का आयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य केंद्रीय सभा के संयुक्त तत्वावधान में, सभी वेद प्रचार मंडलों और आर्य समाजों के माध्यम से देश के सामने वर्तमान में आ रही चुनौतियों के चिंतन, मंथन तथा समाधान के रूप में 21 से 26 फरवरी 2025 तक समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर 6 दिवसीय विशेष प्रवचन माला एवं चुनौतियों का चिन्तन का आयोजन किया गया जो कि गत वर्षो से अलग एक विशेष कार्यक्रम के रूप में अत्यंत प्रेरक सारगर्भित सिद्ध हुआ। जिसमें दिल्ली के सभी वेद प्रचार मंडल तथा प्रांतीय आर्य महिला सभा ने सम्मिलित होकर, महर्षि देव दयानंद की विश्व को देन तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों का विशेष उल्लेख हुआ तथा भविष्य की समस्याओं पर चितन और समाधाान के

21 से 26 फरवरी 2025 तक विभिन्न आर्य समाजों, आर्य विद्यालयों में विशेष प्रवचन देते हुए वैदिक विद्वान, विदुषी, अधिकारी एवं मुख्य अतिथिगण

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव-बोधोत्सव के 6 दिवसीय कार्यक्रमों में उपस्थित आर्यजन एवं विद्यालयों में यज्ञ करते हुए छात्र-छात्राए

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में महर्षि दयानंद सरस्वती की 201वीं जयंती का भव्य आयोजन संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 201वीं जयंती पर संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान जेएनयू द्वारा उसके मनोहरी प्रांगण में भव्य आयोजन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ, इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी का विशेष उद्बोधन उपस्थित प्रोफेसर्स और शोधार्थी छात्र-छात्राओं के बीच अत्यंत प्रेरक और सारगर्भित सिद्ध हुआ। यज्ञ के उपरांत श्री विनय आर्य जी ने इस प्रेरक आयोजन के लिए सर्वप्रथम डॉ. सुधीर कुमार जी को बधाई देते हुए और उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित

देश की स्वतंत्रता और आधुनिक भारत के निर्माता थे महर्षि दयानंद - विनय आर्य

करते हुए बताया कि जिस समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्म हुआ उस समय देश की स्थितियां बहुत ही विपरीत थी और जब वे कार्य क्षेत्र में उतरे तब उन्होंने देखा कि भारत के ऊपर अंग्रेजों का शासन है और भारत में अलग-अलग राज्य बने हुए हैं तथा सभी लोग स्वयं को अपने राज्य का नागरिक मानते हैं ना कि भारत का। अंग्रेजों और मुगलों के परस्पर युद्ध में दोनों तरफ से लड़ने वाली सेना भारतीय थी। इससे पता चलता है कि उस समय के वे लडाके भारतीय केवल लड़ रहे थे, उन्हें यह भी पता नहीं था कि तुम दूसरों के लिए लड़ रहे हो, उस समय के लोगों ने पराधीनता को पूर्ण रूप से स्वीकार किया हुआ था, अंग्रेजी महारानी विक्टोरिया ने देश की पराधीनता पर मरहम लगाते हुए कहा था की अब हम सारी प्रजा का पुत्रवत पालन करेंगे। तब महर्षि दयानंद ने स्वतंत्रता का शंखनाद करते हुए कहा था कि चाहे कोई कितना ही करें लेकिन स्वदेशी राजा से बढ़कर हितकारी कोई नहीं हो सकता। विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का कार्य हो या फिर भारत की एकता अखंडता और आर्यावर्त की परिधि को समझने की बात हो अथवा देश की युवा शक्ति में राष्ट्रभक्ति जागने की बात हो उसके पीछे आपको महर्षि दयानंद सरस्वती जी की विचार शक्ति, उनकी जलाई हुई आज़ादी की ज्योति ही मिलेगी। जितने भी शहीद हुए चाहे राम प्रसाद बिस्मिल हो, चंद्रशेखर आजाद हो,

- शेष पृष्ठ 3 पर

विदेश समाचार

आर्य समाज ऑफ लाँग आइलैंड, अमेरिका ने मनाया महर्षि दयानंद का जन्मोत्सव

राष्ट्र और मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज के संस्थापक एवं महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती जी का जन्मोत्सव भारत सहित विदेशों में भी हर्षोल्लास से मनाया गया। इस क्रम में आर्य समाज ऑफ लॉन्ग आइलैंड अमेरिका में आर्य नर-नारियों ने अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास के साथ महर्षि के जन्मोत्सव मनाया। इस अवसर पर वहां के आर्यजनों ने महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों का वर्णन करते हुए बताया कि महर्षि मानवजाति को सुमार्ग पर चलना सिखाया और महिलाओं को सम्मान और शिक्षा का अधिकार दिलाया, उपस्थित आर्यजनों ने महर्षि दयानंद के 201वें जन्मदिन पर उनके प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। - *वीर मुखी*

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
के तत्त्वावधान में
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जन्म जयन्ती
एवं आर्य समाज स्थापना के 150वें वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित
आर्य महासम्मेलन
महर्षि दयानन्द सरस्वती
दिनांक : रविवार 9 मार्च 2025 को प्रातः 9 से दोपहर 1 बजे तक
स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक
मुख्य अतिथि
श्री बंडारू दत्तात्रेय
महामहिम राज्यपाल, हरियाणा
अध्यक्षता
आचार्य देवव्रत जी
महामहिम राज्यपाल, गुजरात
वरिष्ठ विशिष्ट अतिथि
श्री महिपाल ढाण्डा
शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार
आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।
निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (दयानन्द मठ, रोहतक)
सम्पर्क सूत्र : 8901387993, 9811140360, 9416503513, 9416517866, 7015875390

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना
आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025
• पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
• आयु सीमा: आवेदन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
• छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
• परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
• पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।
आवेदन आरंभ की तिथि : 01-04-2025
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

"It (the Theosophical society) is no more a society of seekers of the wisdom but an organisation where many believe in the few and blind following has come to prevail where shams pass for realities and the credulity of superstition gains encouragement and where the noble ideals of the Theosophical Ethics are enploited and dragged in the mire of Psychism and immorality

Time, energy and money spent in the T.S. have brought further knowledge that the eñisting conditions in the TS- are so deep rooted and so widespread that the disease is incurable, etc—"

''थियोसॉफिकल सोसाइटी सच्चाई को पहचानने का यत्न करने वालों की एक संस्था नहीं रही। यह एक ऐसी संस्था बन गई है जहां थोड़े व्यक्तियों पर अधिक व्यक्तियों का विश्वास है, जहां अन्ध परम्परा का राज्य है, और जहां थियोसोफिकल आचार-शास्त्र के उत्तम आदर्श भूतवाद और अनाचार के कीचड़ में घसीटे जाते हैं थियोसोफिकल सोसाइटी पर जितना समय, शक्ति और धन व्यय किया जाता है, उन्होंने यह साबित कर दिया है कि सोसाइटी की बुराइयां इतनी गहराई तक पहुंची हुई हैं, और इतनी विस्तृत हैं कि उनका इलाज कठिन है, आदि।''

मि. वाडिया सोसाइटी के स्तम्भों में से एक थे। उन्होंने सोसाइटी के बारे में जो अन्तिम सम्मति दी है, वह सिद्ध करती है कि आर्यसमाज से सोसाइटी का सम्बन्ध तोड़ने में महर्षि दयानन्द ने कोई भूल नहीं की। प्रारम्भिक दशा की ही कमजोरियां थीं जो पीछे से ऐसा भयंकर रूप धारण करके मि. वाडिया जैसे भक्तों के डरने का कारण बनीं। **-क्रमशः**

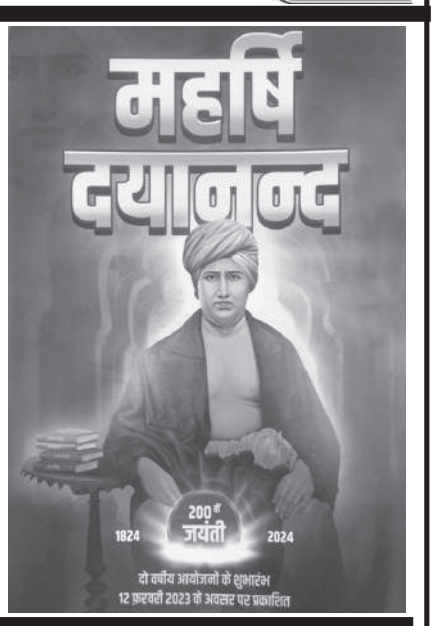

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर
पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Relation with Theosophy

Continue From Last Issue

He transformed into humility and discipleship, pride and guru. Acharya was being made. , Yesterday's Vedanuyayi students, today were becoming consensus teachers.

Meerut's lecture and these quoted letters broke the relation between Arya Samaj and Theosophy. In the periodical paper of Arya Samaj in the month of May 1882 AD, we find the announcement that the relation between Arya Samaj and Theosophy has been severed. sh

What theosophy became after breaking away from the Arya Samaj and where it went, it is not intended to be shown here. Just to show what was the reason behind the changes in Theosophy, we quote a few lines from a letter written by Mr. B. P. Wadia, an old servant of the Society, in 1922, resigning from Theosophy. You had written

"It (the Theosophical society) is no more a society of seekers of the wisdom but an organisation where many believe in the few and blind following has come to prevail where shams pass for realities and the credulity of superstition gains encouragement and where the noble ideals of the Theosophical Ethics are exploited and dragged in the mire of Psychism and immorality

Time, energy and money spent in the T-S- have brought further knowledge that the eñisting conditions in the TS- are so deep rooted and so widespread that the disease is incurable] etc—"

The Theosophical Society ceased to be an organization of truth-seekers. It has become an organization where a small number of individuals believe in a large number of individuals, where blind tradition reigns, and where the noble ideals of Theosophical ethics are dragged into the mire of spiritism and incest, as much time, energy and money is spent on the Theosophical Society. are spent—yes, they have proved that the evils of society are so deep-rooted, and so widespread that they are difficult to cure, etc. SH

Miu Wadia was one of the pillars of the society. The final advice given by him about the society proves that Rishi Dayanand did not make any mistake in breaking the association of the society with Aryasamaj. It was only the weaknesses of the initial condition which became the reason for the fear of Bhattafs like Mr. Wadia by assuming such a terrible form from behind.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or

विदेश में आर्य पुरोहितों की आवश्यकता
● वैदिक विधि से अंग्रेजी भाषा में 16 संस्कारों को कराने का अनुभव
● वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के मर्मज्ञ विद्वान प्रवक्ता को वरीयता दी जाएगी
सूचना प्राप्ति के उपरांत तुरन्त अपना बायोडेटा निम्नलिखित ईमेल पर सेंड करें।
daps.resumes@gmail.com

पृष्ठ 2 का शेष

लिव-इन रिलेशनशिप .....

इन तमाम तथ्यों के बाद भी भारत में युवाओं में 'लिव इन रिलेशनशिप' की स्वीकार्यता बढ़ रही है। शायद इसलिए भी क्योंकि यह धर्म, जाति, वर्ग और नस्ल के परे जाकर संबंधों को मान्य करता है। हालांकि अधिकांश मामलों में शुरू में परस्पर आकर्षण और आपसी सहमति से बनने वाले ये अंतरंग संबंध बाद में सतत झगड़े और यौन शोषण में तब्दील हो जाते हैं। थोड़े समय पहले पुलिस महिला सुरक्षा शाखा के एक अध्ययन में खुलासा हुआ कि मध्यप्रदेश में वर्ष 2019, 2020 व 2021 के दौरान 'लिव इन' में रहने वाली युवतियों ने सबसे ज्यादा रेप के मामले दर्ज कराए हैं। इस अवधि में कुल 14 हजार 476 मामले बलात्कार के दर्ज हुए, इनमें से 85 फीसदी प्रकरण लिव इन रिलेशनशिप से जुड़े थे। इनमें सभी आरोपी लिव इन पार्टनर थे। केवल 2 फीसदी मामलों में आरोपी अजनबी थे।

ज्यादातर मामलों में यह देखने में आया है कि पुरुष, महिलाओं को कुछ समय बाद शादी करने का झांसा देकर 'लिव इन रिलेशनशिप' में रहने के लिए तैयार कर लेते हैं। एक बार यह हो जाने पर शादी करने से पल्ला झाड़ लेते हैं। ऐसे में उनकी महिला लिव इन पार्टनर कहीं की नहीं रहती। बावजूद इसके लड़कियां लिव इन पार्टनर बनने इतनी आसानी से तैयार क्यों हो जाती हैं, इस सवाल का जवाब कठिन है।

इसका एक कारण शहरों में उन्मुक्त जीवन जीने की चाह, सही उम्र में विवाह न हो पाना, आर्थिक संकट, पसंदीदा वर न मिल पाना या परिवार से बगावत भी हो सकता है। कई मामलों में तो यह भी देखने में आता है कि पुरुष पार्टनर पहले से शादीशुदा होता है और केवल यौनेच्छा पूर्ति के लिए किसी महिला को लिव-इन पार्टनर बना लेता है।

देखा जाए तो लिव-इन रिलेशनशिप के मुश्किल से 10 प्रतिशत मामले ही शादी तक पहुँच पाते हैं। बाकी 90 प्रतिशत मामलों में रिश्ते टूट ही जाते हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव और पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में आने के कारण अब लिव-इन रिलेशनशिप को अधिक स्वीकार्य माना जाने लगा है। यह सहवास के नैतिक परिणामों तथा विवाह और परिवार के पारंपरिक विचारों पर प्रश्न उठाता है। भारतीय युवाओं की जीवन शैली में तेजी से बदलाव आ रहा है। इसके लिए ये आधुनिक संस्कृति को अपनाने में कोई भी झिझक महसूस नहीं करते और लिव-इन रिलेशनशिप आधुनिक संस्कृति की ही एक शैली है।

अतीत में भारतीय समाज पारंपरिक मूल्यों पर आधारित था और प्रतिबद्ध रिश्ते का एकमात्र स्वीकृत रूप विवाह था। लिव-इन पार्टनरशिप को अक्सर कलंकित माना जाता था तथा समाज द्वारा इसे नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता था। किंतु अब इसे कानून का जामा पहनाकर उत्तराखंड सरकार यह साबित करने की कोशिश कर रही है कि यह समय की पुकार है, लेकिन यहां बुनियादी सवाल यही है कि क्या हमारा मानस इसे पूरी तरह स्वीकार करने के लिए तैयार है?

-संपादक

SPECIAL REQUIREMENT
1. DTP Operator -2
2. Hindi-English Typist -2
3. Social Media Specialist -2
Required for OTT Channel
1. Video Cameraman
2. Video Editor (0Premiere Pro)
3. Creative Director
4. Driver
5. IT Project Manager B.Tech/M.Tech
Internships are also available in various departments.
Interested Candidates should send their resume on e-mail
daps.resumes@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

देश की वर्तमान चुनौतियों का ....

सूत्र प्रस्तुत किये गये ।

इस कार्यक्रम में आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डॉ वेदपाल जी, डॉ छवि कृष्ण शास्त्री जी, डॉ विनय विद्यालंकार जी, डॉ जयेंद्र कुमार आचार्य जी, डॉ धर्मेन्द्र शास्त्री जी, डॉ. पुनीत आचार्य जी, डॉ हरि देव शास्त्री जी, डॉ कल्पना आर्या जी, आचार्य विरेन्द्र विक्रम जी, डॉ ऋतिका जी, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी, आ. नरेन्द्र मैत्रेय जी ने सुझायें गए विषयों अनुसार-वेद परमात्मा का ज्ञान है, आर्य समाज एवं सामाजिक कुरीतियां, पुनर्जन्म का सिद्धांत, महर्षि दयानंद एवं मनुस्मृति, कर्म फल सिद्धांत, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, हैदराबाद आंदोलन, आर्य समाज की विश्व व्यापकता, आर्य समाज के विषय में भ्रांतियां एवं निवारण, जाति पाति व्यवस्था एवं आर्य समाज, सृष्टि उत्पत्ति की वैदिक अवधारणा, विशुद्ध वर्ण व्यवस्था, तीर्थ, वास्तविक बलिप्रथा, आर्य समाज एवं हिंदी आंदोलन, आर्य समाज और अनाथालय एवं गौ सेवा, आर्य समाज के क्रांतिकारी कदम-छुआछूत निवारण, महर्षि दयानंद एवं उनके कार्य, आर्य समाज और अंधविश्वास निवारण तथा ऋषि बोधोत्सव आदि विषयों पर अपने ओजस्वी उद्बोधनो द्वारा श्रोताओं के मन मस्तिष्क पर एक गहरी छाप छोड़ी। सभी महानुभावों को इस विशेष योगदान हेतु धन्यवाद। उपरोक्त विभिन्न सत्रों में हमारे मुख्य अतिथियों में - श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सुरेंद्र कुमार रैली, प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, श्री ललित कुमार, चार्टर्ड अकाउंटेंट एंड कंपनी सेक्रेट्री, श्री विनोद सिघल, प्रधान, श्रीराम कृष्ण मन्दिर, पीतम पुरा, श्री अमित नागपाल, निगम पार्षद, पीतमपुरा क्षेत्र, श्री वेद प्रकाश गुप्ता, जिला संघ संचालक, श्री मुकेश गोयल, नेता सदन, दिल्ली नगर निगम, श्री नवीन कुमार, मीडिया प्रभारी, भाजपा, श्री ओम प्रकाश शर्मा, विधायक, दिल्ली सरकार, श्री आलोक कुमार महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद, श्री नीरज बसोया, विधायक, दिल्ली सरकार, श्री अनिल शर्मा, विधायक, दिल्ली सरकार, ने कार्यक्रम में आकर महर्षि दयानंद को नमन किया और अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

आर्य समाज स्थापना से समकालीन वैदिक विचारधारा एवं देश प्रेम को अभिव्यक्त करने तथा अंधविश्वास निवारण और समाजिक कुरितियों के नाश हेतु अग्रसर रहा है। महर्षि के अनुयायियों में उन विकृतियां को दूर करने हेतु अथक प्रयास किये, आज हम उनको नमन करते हैं। लेकिन विचारनीय विषय यह है आज भी विदेशी ताकतें हमारी संस्कृति और देश के वर्तमान और भविष्य को समाप्त करने के लिए प्रयासरत और भीतर घात कर रही हैं, इन्हीं चुनौतियों के चिंतन पर श्री सुरेंद्र कुमार रैली, प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. मुकेश आर्य, मन्त्री, आर्य केंद्रीय सभा, श्री राकेश आर्य, महामंत्री, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, श्री विवेक आहूजा, प्रधान, आर्य समाज कृष्णा नगर, श्री विकास शर्मा, महामंत्री, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, आचार्य दिनेश आर्य, संवर्धक, ने हर सत्र में अपने विचारों से उपस्थित सदस्यों को जागरूक करने का प्रयास किया।

इस कार्यक्रम के 10 सत्रों को चार विद्यालयों, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार, चेयरमैन श्री संजय कुमार, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल रमेश नगर, चेयरमैन नरेन्द्र सुमन आर्य, मॉडल स्कूल, आदर्श नगर, चेयरमैन रविन्द्र बत्रा तथा एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पश्चिम पंजाबी बाग, चेयरमैन श्री सत्यानंद आर्य और छः आर्य समाजों-आर्य समाज हनुमान रोड, सी.पी. ब्लॉक, पीतमपुरा, डी ब्लॉक विकासपुरी, आदर्श नगर, प्रीत विहार तथा आर्य समाज कैलाश, जी. के. 1 में आयोजित किया। सभी संस्थाओं के अधिकारियों ने यथा संभव सहयोग किया।

हर सत्र के ओजस्वी उद्बोधनों को देने वाले वक्ताओं का आर्य केंद्रीय सभा द्वारा स्मृति चिन्ह एंव शाल प्रदान कर तथा विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों ने दक्षिणा देकर सम्मान किया। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों का मंच सचालन श्रीमती रश्मि वर्मा, प्रबंधक, रघुमल आर्य कन्या स्कूल तथा श्रीमती सुनीता पासी, प्रधाना, फं दिल्ली महिला वेद प्रचार मंडल, श्री नरेंद्र सिंह हुड्डा, प्रधान, आर्य समाज हनुमान रोड, श्री राकेश आर्य, महामंत्री, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, श्री सोहनलाल आर्य, मंत्री, आर्य समाज सी. पी. ब्लॉक पीतमपुरा, श्री वीरेंद्र गोयल, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज डी ब्लॉक विकासपुरी, श्री अजय कालरा, महामंत्री, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, श्रीमती सुदीप्ता कुशवाहा, मंत्री, आर्य समाज आदर्श नगर, श्री विकास शर्मा, महामंत्री, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल तथा श्री रविन्द्र आर्य, महामंत्री, दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, ने भी अतिव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं, सभी का धन्यवाद्।

इस आयोजन को सफल बनाने में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा, प्रांतीय आर्य महिला सभा, प्रधाना श्रीमती रचना आहुजा, वेद प्रचार मंडलों-उत्तर दिल्ली प्रधान, श्री सुरेन्द्र पाल सिंह, उत्तरी पश्चिमी दिल्ली प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता, पश्चिमी दिल्ली प्रधान कर्नल रमेश मदान, मध्य दिल्ली प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, पूर्वी दिल्ली प्रधान श्री अशोक गुप्ता तथा दक्षिणी दिल्ली प्रधान श्री रविदेव गुप्ता, विभिन्न विद्यालयों और आर्य समाजों के अधिकारियों का विशेष योगदान रहा। सभी का धन्यवाद।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन

आइए, सहभागी और सहयोगी बनें

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौराक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा। **एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।**

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उददेश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
email : aryasabha@yahoo.com

शोक समाचार

पद्मश्री श्यामसिंह शशि जी का निधन

आर्यसमाज के वैदिक विद्वान, लेखक, चिन्तक एवं विचारक, पद्मश्री से सम्मानित डॉ. श्याम सिंह शशि जी का 20 फरवरी, 2025 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 मार्च, 2025 को सम्पन्न हुई, जिसमें दिल्ली सभा सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री हरबंस लाल कोहली जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एवं शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान श्री हरबंस लाल कोहली जी का दिनांक 25 फरवरी, 2025 को लगभग 100 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 मार्च, 2025 को आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 में सम्पन्न हुई, जिसमे सभा अधिकारियों सहित शुद्धि सभा एवं निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री रजनीश वर्मा को भगिनी शोक

आर्यसमाज डी ब्लाक जनकपुरी के पूर्व मन्त्री श्री रजनीश वर्मा जी की बहिन श्रीमती रेखा वर्मा जी का दिनांक 19 फरवरी को लगभग 67 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 2 मार्च को डी-1 पार्क, जनकपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा के साथ-साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 3 मार्च, 2025 से रविवार 9 मार्च, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 6-7-8/03/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 मार्च, 2025

चलो मुम्बई! चलो मुम्बई!! चलो मुम्बई!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज का 150वाँ स्थापना दिवस समारोह

सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई
29-30 मार्च, 2025 (शनि-रविवार)

तद्नुसार चैत्र अमावस्या - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वि.सं. 2081-82

★ आप सब सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं। ★ सभी अभ्यागतों हेतु पंजीकरण अनिवार्य है। ★ कृपया अपना पंजीकरण अवश्य कराएं। ★ अपना पंजीकरण करने के लिए दिए गए कोड को स्कैन करें या वैबसाइट पर जाएं।
★ किसी भी प्रकार की सहायता, सहयोग अथवा जानकारी के लिए दिए गए नम्बरों में किसी पर भी व्हाट्सएप्प सन्देश भेजें या बात करें।

www.aryasamajmumbai150years.com/registration/
www.aryasamajofficial.com
Whatsapp : 8422891578 / 9152137937 / 8657017952
Instagram: www.instagram.com/aryasamaj.official/
Face Book : facebook.com/profile.php?id=61572694295500

ओ३म्
अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ
के अंतर्गत
आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
सिक्किम फेलोशिप बैच 2022-23
के छात्रों का चयन सिक्किम लोक सेवा आयोग में हुआ।

ओम बहादुर लेखा अधिकारी | गौरव तिरुवा कृषि विकास अधिकारी | विकास बिस्वाकर्मा सहायक राजस्व सर्वेक्षक | सुजाता सुनार लेखा अधिकारी

आर्य समाज की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएं
आर्य समाज आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹60
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80
पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120
उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹160
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300 प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह